

मूल्य और आध्यात्मिकता से सभी परिचित हैं। यह कोई नई अवधारणा नहीं है। यह तो हमारी सामाजिक विरासत के कुछ अपरिहार्य या यूँ कहें कि ज़रूरी तत्व हैं। इनका विकास जीवन पथ को एक नई दिशा देता है। सभी इसका प्रयोग आने वाले समय में करेंगे ही, क्योंकि चुनौतियों का सामना करने के लिए विवेक को जगाना ज़रूरी है।

आपको एक जीवन्त उदाहरण से विवेक शक्ति को समझाने का प्रयास करते हैं। मनुष्य हर कर्म के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य छोड़ता है या देता है। यदि किसी पर क्रोध करता है, या उसे दण्डित करता है, तो कारण बतायेगा और अपने इस गलत कार्य को दूसरे के ऊपर दोषारोपित कर सही सिद्ध करने का प्रयत्न करेगा। दण्ड देने के कार्य को मनुष्य प्रायः अपना अधिकार और कर्तव्य समझता है। अगर कोई कहीं पर कुछ Bribe (घूस) लेता

विवेक, जागृति का दूसरा नाम

है तो उसे वह यह कहकर टालता है कि यह तो सुविधा शुल्क है जी, और आप उन्हें यह भी कहता पायेंगे कि हमारी नौकरी में हमें मिलता ही क्या है...! उसके तर्कों की झड़ी सी लगी होती है, कि यदि वह

ऐसा नहीं करेगा तो उसके ऊपर नौकरी करने वाले उसे टॉर्चर करेंगे। कोई यदि कहीं पर कुछ गलत या अनैतिक सम्बन्ध बनाता है, तो वह उसे भी विवेकसम्मत मानते हुए कहता है, कि दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुंचाना गलत है। उसका पति/पत्नी का व्यवहार उसके प्रति ठीक नहीं है। उपर्युक्त बातें कर कौन रहा है, हम सभी। उस गलत को सिद्ध कौन कर रहा है, हम। अब बताइए, हमारा विवेक कार्य कर रहा है? अनैतिक कार्य करने की इच्छा विवेक को मार



रही है। व्यक्ति केवल झूठे अहम् की तुष्टि के लिए गलत और सही को समझने वाले विवेक का गला घोट रहा है। ऐसा करने वाला मनुष्य स्वयं को धोखा देता है। इस प्रकार गलत को सही ठहराने की आदत

से मनुष्य का विवेक कमजोर होता जाता है। वह दोहरे मानदण्डों से जीवन व्यतीत करता है। अब इसे ऐसे समझते हैं कि यदि किसी की बुद्धि सतोप्रधान है, तो वह इस बात की जाँच करेगा कि कार्य उचित, प्रभावशाली, कम खर्च वाला, नैतिक, सामाजिक रूप से सही है या नहीं। वह व्यक्ति सतोप्रधान विवेक का इस्तेमाल कर रहा है। अर्थात् नैतिकता को सम्पूर्ण अपनाने वाला ही समर्थ है। सतोप्रधान विवेक वाला मनुष्य सूक्ष्मता से समझता

है, और वैसा ही व्यवहार भी करता है। वहीं रजोप्रधान वाला दो प्रकार की असंगत बातों को अपनाता है। वह गलत को समझता तो है, परंतु उसे रोक पाने में असक्षम अनुभव करता है। इसे उसकी चारित्रिक दुर्बलता के साथ जोड़ा जा सकता है। वह हमेशा युक्ति-युक्त तर्कों का निर्माण करेगा, और कहेगा... अरे! क्या फर्क पड़ता है, किसी को पता कहाँ चलता है, पता नहीं पड़ेगा। अभी कर लो, बाद में देख लेंगे आदि आदि। वह इसके दुष्प्रभावों से बेपरवाह है। लेकिन कष्टकारी परिणाम वह झेल नहीं सकता। वहीं तमोप्रधान विवेक तो भावनाओं, इच्छाओं से प्रभावित होता, और घृणा और बदले की भावना के रूप में उग्र व्यवहार करता है। उसे यदि समझाया जाए तो वह आलोचना सुनकर असहज और अहंकार से प्रेरित होकर कड़ी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है। वह बिल्कुल ही पाखंडी होते हैं।



- ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

उपरोक्त धारणा का वर्णन करने का सिर्फ यही मकसद है कि हमें सही-गलत का फैसला कर, अपनी बुद्धि को जगाना तथा कार्यो के दुष्परिणाम को देखते हुए भविष्यके लिए कार्य करना है। नहीं तो दुःखी हो जायेंगे।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे



मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। विधायक सुषमा पटेल को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

प्रश्न- मैं एक कुमार हूँ। मैं ये जानना चाहता हूँ कि मैं अपनी पवित्रता को श्रेष्ठ कैसे बनाऊँ ताकि स्वप्न तक में भी कोई व्यवधान न रहे?

उत्तर- आत्माओं को पावन बनाने के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ता है। वे आकर राजयोग सिखाते हैं जिससे हम सर्वशक्तिवान से शक्तियाँ लेकर इस माया पर विजयी बनते हैं। यदि कोई राजयोग का अभ्यास चार घण्टे प्रतिदिन न करे तो चाहे वह कोई भी हो, उसे काम वासना सतायेगी ही। यही कारण है कि सन्यासी भी पवित्रता का सुख नहीं ले पाते।

आप श्रेष्ठ पवित्र बनकर भगवान को मदद करना चाहते हैं यह सर्वोत्तम पुण्य है। बिना साधना पवित्रता श्रेष्ठ नहीं हो पायेगी इसलिए राजयोग की साधना के साथ सम्बन्धों में न्यारेपन का अभ्यास भी करें। न्यारे न होने से एक दो के इतने प्यारे बन जाते हैं कि वासना हावी हो जाती है।

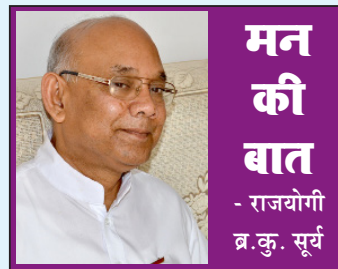
अमृतवेले योग का आनंद लें। स्वयं को स्मृति-स्वरूप रखने के लिए एक अव्यक्त मुरली का प्रतिदिन अध्ययन करें। सारे दिन में कुछ भी खाते-पीते, पानी, दूध या भोजन को दृष्टि देकर सात बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, फिर सेवन करें। एक संकल्प दृढ़ता पूर्वक कर लें कि मेरा जीवन दूसरों को व प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स देने के लिए है। तो कम से कम पाँच बार इन सबको 'मैं पवित्रता का सूर्य हूँ' इस स्वप्न में स्थित होकर वायब्रेशन्स दें। इससे छः मास में ही आपकी पवित्रता आनंदकारी हो जायेगी।

प्रश्न- मैं एक कन्या हूँ। दो वर्ष से ज्ञान में हूँ। ज्ञान से पूर्व मेरा किसी से लगाव हो गया था। अब मैं उसे भूल नहीं पा

रही हूँ। मैं अब योगी बनना चाहती हूँ व सबकुछ भूलना चाहती हूँ।

उत्तर- दैहिक प्रेम बड़ा ही दुखकारी है। इस प्रेम ने बहुतों को कष्ट पहुंचाया है और प्रभु-प्रेम के मार्ग में तो यह गंदा नाला है। आपने सुंदर संकल्प किया है उसे भूलने का। याद रखना, श्रेष्ठ स्मृतियाँ पुरानी स्मृतियों को विस्मृत कर देती हैं। इसलिए कुछ श्रेष्ठ स्मृतियों का अभ्यास छः मास तक करो।

मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ और वह भी



मन की बात - राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

आत्मा है। उसे आत्मा देखने के अभ्यास से आकर्षण समाप्त होता जाएगा। यह संसार एक नाटक है। अब यह नाटक पूरा हो रहा है, हम सबको परमधाम वापिस जाना है। इससे पूर्व हमें अपने प्राणेश्वर परमपिता से सर्वस्व प्राप्त करना है। मैं वही इष्ट देवी हूँ, जिनकी मंदिरों में पूजा हो रही है। ये तीनों अभ्यास रोज पच्चीस बार अवश्य करना। साथ-साथ चिन्तन भी करना कि देहधारियों से तो हजार वर्ष प्यार किया, अब तो भगवान से ही प्यार करना है। इस प्यार में परम सुख है।

प्रश्न- मेरा एक ही लड़का है। ग्यारहवीं क्लास में पढ़ता है, परन्तु बुरे संग में

आकर बिगड़ गया है, व्यसनों में फंस गया है। रात को बारह बजे घर आता है, पढ़ाई बिल्कुल नहीं करता। घर में आकर झगड़ा करता है। उसके पापा तो हार्ट-पेशेन्ट बन गये हैं। मैं बहुत चिंतित हूँ, उसे सुधारने का उपाय बताइये?

उत्तर- एक स्थूल तरीका भी है, परन्तु शायद आप न कर पायें। जब वो रात्रि को देर से आए तो दरवाजा ही न खोलो। परन्तु इसके लिए तो मज़बूत दिल चाहिए। आप प्रतिदिन 108 बार दो स्वप्न का अभ्यास करें- मैं एक महान आत्मा हूँ और मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे आपके बोल में प्रभाव आयेगा। उसे भी इसी दृष्टि से देखना कि वह देव कुल की आत्मा है। रोज़ सवेरे पांच या छः बजे दस मिनट तक उसे अच्छे वायब्रेशन्स देना। योग करके इस स्वप्न में स्थित होना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मुझसे किरणें निकलकर उस आत्मा को जा रही हैं। ऐसा इक्कीस दिन तक करना। भोजन बनाते हुए 108 बार याद करना कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और जब उसे खिलाओ तो संकल्प करना कि इस ब्रह्मा भोजन से इसका चित्त शुद्ध हो। बीमार होने से तो समस्या बढ़ेगी ही। इसलिए धैर्यपूर्वक और हिम्मत से इस समस्या का हल करें।

प्रश्न- वर्तमान समय प्रमाण बापदादा बार-बार इशारा दे रहे हैं कि अन्तिम समय अचानक आना है और अचानक के पेपर में पास होने के लिए विशेष दो

बातों पर अन्डरलाइन करनी है। एक है व्यर्थ संकल्प से मुक्त और दूसरा है व्यर्थ समय से मुक्त। तो कैसे बनेंगे इन दोनों बातों से मुक्त ?

उत्तर- व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए शुद्ध संकल्पों के खजाने को बढ़ायें और शुद्ध संकल्पों का आधार है रोज की ईश्वरीय मुरली।

व्यर्थ संकल्पों का कारण है कमजोर मन। तो मन को शक्तिशाली बनायें। मन को शक्तिशाली बनाने के लिए रोज सारे दिन में कम से कम आठ बार पाँच स्वरूपों की ड्रिल करें।

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए तीन बातें छोड़नी हैं और तीन बातें धारण करनी हैं। परचिन्तन को छोड़ स्वचिन्तन करना है। परदर्शन छोड़ स्वदर्शन करना है। परमत और मनमत को छोड़ श्रीमत पर चलना है। व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के हेतु सदा स्वप्न में रहें, क्योंकि स्वप्न की कमी से अभिमान उत्पन्न होता है। जहाँ अभिमान है वहाँ अपमान की बहुत जल्दी फीलिंग होती है।

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए सदा पॉजिटिव सोचें। यदि किसी भी कारण से निगेटिव संकल्प चले तो अपने से पूछें कि निगेटिव सोचने से कुछ फायदा है? यदि नहीं तो मैं क्यों सोच रहा हूँ? नकारात्मकता व्यर्थ का बीज है। व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए ड्रामा के ज्ञान को यूज करें। ड्रामा की हर सीन में कल्याण है, क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ और साथ है। व्यर्थ संकल्प को खत्म करने के लिए श्रीमत की लगाम टाईट करें। चेक करें अमृतवेले से लेकर रात्रि तक हमार हर कर्म श्रीमत मर्यादा प्रमाण रहा? और यदि नहीं तो क्यों?

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ़ माइंड चैनल'

24x7 Ad. Free Value Based Channel

Peace of Mind CHANNEL

TATA Sky 1065

airtel digital TV 678

videocon d2h 497

dishtv 1087

+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com